AN INTERNATIONAL CONFERENCE ON
Humanities, Science & Research
At Asha Girls College, Panihar chack, Hisar (Haryana)
27-28th January, 2024

डॉ. मानसिंह दहिया 'आनंद' के काव्य में शब्दालंकारों की समीक्षा

राजबीर, शोधार्थी, हिंदी विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़, राजस्थान

सारांश

हिंदी काव्य साहित्य में अलंकारों का विशेष महत्व है। अलंकार काव्य की भाषा को सौंदर्यपूर्ण, प्रभावशाली, आकर्षक एवं भावाभिव्यक्ति को अधिक सशक्त बनाने का महत्वपूर्ण माध्यम हैं। काव्य में शब्दों के विशिष्ट प्रयोग से उत्पन्न सौंदर्य को शब्दालंकार कहा जाता है। प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य डॉ. मानसिंह दहिया 'आनंद' के काव्य में प्रयुक्त शब्दालंकारों का समीक्षात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। शब्दालंकार काव्य की अभिव्यक्ति में नवीनता, लयात्मकता, ध्वन्यात्मक सौंदर्य तथा कलात्मक प्रभाव उत्पन्न करते हैं। अनुप्रास, यमक, श्लेष, पुनरुक्ति प्रकाश एवं वक्रोक्ति जैसे शब्दालंकार काव्य भाषा को विशिष्ट सौंदर्य प्रदान करते हैं। इस अध्ययन में डॉ. मानसिंह दहिया 'आनंद' की काव्य रचनाओं में प्रयुक्त विभिन्न शब्दालंकारों की पहचान करते हुए उनके स्वरूप, प्रयोग, विशेषताओं एवं काव्यगत प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। साथ ही, यह समझने का प्रयास किया गया है कि कवि ने शब्दालंकारों के माध्यम से अपने भावों, विचारों, संवेदनाओं एवं सामाजिक अनुभवों को किस प्रकार प्रभावशाली अभिव्यक्ति प्रदान की है। शोध में कवि की भाषा-शैली, शब्द चयन, ध्वनि सौंदर्य, लयात्मकता तथा अभिव्यक्ति कौशल को भी विशेष महत्व दिया गया है। इसके अतिरिक्त, शब्दालंकारों के प्रयोग से काव्य में उत्पन्न होने वाले सौंदर्यात्मक प्रभाव एवं पाठकीय अनुभूति का मूल्यांकन भी किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य केवल अलंकारों की गणना करना नहीं, बल्कि कवि की रचनात्मक प्रतिभा और काव्यात्मक अभिव्यक्ति में उनकी भूमिका को स्पष्ट करना है। निष्कर्षतः, डॉ. मानसिंह दहिया 'आनंद' के काव्य में शब्दालंकारों का प्रयोग काव्य सौंदर्य, भाषिक प्रभावशीलता एवं कलात्मक अभिव्यक्ति को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उनका समीक्षात्मक अध्ययन हिंदी काव्यशास्त्र एवं अलंकार परंपरा के संदर्भ में कवि के साहित्यिक योगदान को समझने का एक महत्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करता है।

Quality Of Work... Never Ended...